International Journal of Social Science and Humanities
www.humanitiesjournals.com
Online ISSN: 2664-8628
Received: 08-05-2026, Accepted: 08-06-2026, Published: 23-06-2026
Volume 8, Issue 2, 2026, Page No. 231-233

हिन्दी के प्रमुख कहानीकारों की कहानियों में चित्रित बाल–मनोविज्ञान

डॉ. सीमा सिंह
सहायक प्रोफसर, हिन्दी विभाग, दयानंद महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijssh.2026.8.2.8101

सारांश
आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य, विशेष रूप से कहानियों में बच्चे, बचपन और बाल–मनोविज्ञान प्रारम्भ से ही विद्यमान रहा है। बचपन, मानव के जीवन में सीदे, सरल और प्यारे समय का द्योतक है। इसका प्रभाव हर पल, अलग–अलग रूपों में जीवन के प्रत्येक पड़ाव पर दिखाई देता भी है। बचपन लाड़–प्यार का पर्याय भी होता है, माता–पिता का अपने बच्चों के प्रति प्रेम, बचपन में हर समय लड़ते–झगड़ते दिखने वाले भाई–बहनों का आपसी प्रेम और लगाव, गुरु का अपने छोटे शिष्यों के प्रति प्रेमभाव और बड़ों का घर के छोटे बच्चों के प्रति दुलार, जीवन को रसमय और आनंद से भर देता है। हिन्दी साहित्य में जीवन के इस काल को विषय स्थान और प्रमुखता प्राप्त हुई है। बालक, बचपन, बालमन विषय पर हिन्दी साहित्य में लेखन की एक पुरानी और समृद्ध परंपरा रही है। आरम्भ में बच्चों को मनोरंजन के साथ नैतिकता का पाठ सीखाने के लिए पंचतंत्र, हितोपदेष और विक्रम–बेताल आदि कहानियों ने भारतीय घरों में विशेष जगह बनाई है। इसके बाद भक्तिकालीन कवियों ने अपने ईश्वर के बालरूप का चित्रण बड़े मनोवेग से किया है। आधुनिक कथाकारों ने बालकों का चित्रण भर न करके, उसे उसके मन के साथ समझते हुए, समाज में उसको प्रतिष्ठित करने का काम किया है। प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, जैनेन्द्र, और यशपाल आदि कथाकारों ने बहुत यथार्थवादी दृष्टिकोण के साथ अपनी रचनाओं में बालमन का चित्रण किया है।

मूल शब्द: बाल–मनोविज्ञान, बालमन, कहानियाँ, प्रेमचंद, जयषंकर प्रसाद, जैनेन्द्र, यशपाल

प्रस्तुत शोध–पत्र में प्रेमचंद, जयषंकर प्रसाद, जैनेन्द्र, और यशपाल की कहानियों को शोध विश्लेषण का आधार बनाया गया है। ऐसा नहीं है कि केवल इन्ही कथाकारों की कहानियों में ही बाल–मनोविज्ञान मौजूद है। हिन्दी साहित्य में इस विषय पर विपुल साहित्य भण्डार उपलब्ध है परन्तु शोध–पत्र को एक सीमा तक ही विस्तारित किया जा सकता है, समय, शब्द–सीमा, स्थान आदि कुछ ऐसी बाधाएँ होती हैं जिनका एक शोधकर्ता को ध्यान रखना होता है। शोधकर्त्री ने हिन्दी के प्रसिद्ध कहानीकारों और उनकी कहानियों को इस शोध–पत्र का विषय बनाकर एक विस्तृत विश्लेषण करने का प्रयास किया है, जिसे आगे भी विस्तार दिया जा सकता है। इसमें सम्मिलित कहानियों में प्रेमचंद की 'ईदगाह' और 'बड़े भाई साहब', जयशंकर प्रसाद की 'छोटा जादूगर' और 'मधुआ', जैनेन्द्र कुमार द्वारा रचित 'पाजेब' और 'खेल' तथा यशपाल द्वारा रचित 'आदमी का बच्चा' और 'अखबार में नाम' हैं। इनकी विशेषता यह है कि इन सब कहानियों में कोई न कोई बच्चा ही केन्द्रिय पात्र है। साथ ही उस बच्चे के मनोविज्ञान का चित्रण भी कहानीकार के लेखन का मुख्य लक्ष्य रहा है।

बाल–मनोविज्ञान मन का विज्ञान होता है। उसका संबंध व्यक्ति के आत्मविकास, आत्मसाक्षात्कार, चरित्र–निर्माण, मानसिक क्षमता और इन्द्रियेत्तर प्रत्यक्ष आदि से होता है।[1] एक तरह से बाल–मनोविज्ञान बच्चों के द्वारा किए गए व्यवहार का विज्ञान है। साहित्य में इस दृष्टिकोण से लिखे गए साहित्य का उद्देश्य विभिन्न परिस्थितियों में बच्चों की समस्याओं का समाधान करना होता है। प्रो. कुसुम मिश्र के अनुसार, "बच्चे जितने सरल और सीधे होते हैं, उन्हें समझना उतना ही कठिन होता है। इसलिए बाल–मनोविज्ञान समझना उतना ही आवश्यक है, जितना एक स्वस्थ समाज के लिए एक स्वस्थ पीढ़ी का निर्माण करना।[2]

बच्चों के मानसिक विकास के सन्दर्भ में प्रेमचंद का मानना है कि, "घर के मामलों में शुरु से ही बच्चों की राय ली जानी चाहिए..... ..हर एक मामूली आदमी को यह जानकर गर्व होता है कि घर में उसका भी एक स्थान है, वह भी कुछ समझा जाता है। बालक भी इस भाव से खाली नहीं होता।"[3] उनका यही भाव जिम्मेदारी में बदल कर एक बेहतर कल का निर्माण करता है। उनकी 'ईदगाह' कहानी इस बात का साक्ष्य है, "अब वह दौर शुरु हुआ जिसका बच्चों को बेसब्री से इंतजार था। ईदगाह भी आ गई। झूले चढ़ने, खिलौने खरीदने और मिठाई खरीदने की होड़ शुरु हुई। तब हामिद ने आत्मनियंत्रण की रक्षायुक्ति अपनाई।[4] हालांकि बच्चों में वृद्धों वाले धैर्य की अपेक्षा कैसे की जा सकती है, प्रेमचंद बालमन पर गहरी पकड़ रखते हैं और अपने बाल पात्र से वही करवाते–कहलवाते हैं, जो हामिद जैसा आदर्श बच्चा करेगा। हामिद ने खिलौनों की निंदा करते हुए कहा, "मिट्टी के ही तो हैं, गिरे तो चकनाचूर हो जाएं। साथ ही ललचाई नजरों से उनकी तरफ देखता भी है और उन्हें हाथ में भी लेना चाहता है।"[5] मिठाइयों के समय भी यही होता है। सब बच्चे उसे मिठाई भी नहीं देते, चिढ़ाते भी हैं और उसका मजाक भी बनाते हैं। साथियों द्वारा किया गया यह उपेक्षित व्यवहार हामिद में एक बालसुलभ सहज प्रतिक्रियात्मक भावना को जन्म देता है। उसके पास केवल तीन पैसे ही तो हैं, परन्तु वह इन तीन पैसों से ही कुछ ऐसा ले लेना चाहता है जो सबसे अलग हो, असाधारण हो। वह लोहे के सामान की दूकान में चिमटा देखता है तो उसे सहसा दादी की याद आ जाती है। साथ ही याद आती है रोटियाँ सेंकते हुए दादी के हाथ जलने की। वह चिमटा खरीद लेता है। "मेले में हामिद को छोड़कर सब बच्चे आगे बढ़ जाते हैं पर हामिद लोहे की दुकान पर रुक जाता है। कई चिमटे रखे हुए थे। उसे ख्याल आया, दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती हैं तो हाथ जल जाते हैं। अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे देगा तो वह कितना प्रसन्न होंगी। फिर उनकी उंगलियाँ कभी न जलेंगी। घर में एक काम की चीज हो जाएगी।"[6] एक बच्चे द्वारा मेले में खेल का सामान या खाने का सामान न खरीदना और चिमटा खरीद लेने की बात बेतुकी सी होते हुए भी बेमतलब नहीं है। यही वो अलग बात थी जिसने हामिद का सब साथियों पर सिक्का जमा दिया और सब में विशेष बना दिया। हामिद में धैर्य तो है ही, साथ ही उसमें है संकल्प

और आशा, कि बड़ों की दुआएँ सीधे अल्लाह के दरबार में पहुंचती हैं और तुरंत सुनी जाती हैं। उसे अपने पिता का इंतजार है जो दादी ने बताया हुआ है कि अल्ला मियाँ के पास गए हैं उसके लिए बहुत से खिलौने–मिठाइयाँ लाने। अब एक और गहरा भावनाओं से भरा हुआ अनुभव उसका इंतजार कर रहा था। 'सभी बच्चे ईदगाह से वापिस आ जाते हैं, लेखक ने सबके मिट्टी के खिलौनों का घर पहुंचने का, आपस में झगड़ने और खिलौने टूटने का और अपनी माओं से पिटने का हाल विस्तार से सुनाया है। अब मियाँ हामिद का हाल सुनिए। अमीना उसकी आवाज सुनते ही दौड़ी और उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगी। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी।

'यह चिमटा कहाँ था? मैंने मोल लिया है।

कै पैसे में? तीन पैसे दिये।[7] दोनों में ही एक–दुसरे के लिए प्रेम अपने चरम पर है। जो भी बच्चा पाठक इस कहानी को पढ़ेगा सोचिए उसके मन–मस्तिष्क पर कितना सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। ईद के मौके पर जेब में तीन पैसे लिए दोस्तों के साथ मेले की तमाम दुकानें घूमते हामिद का बाल मन मिठाइयों, खिलौनों पर आता तो है लेकिन अंत में वो उन पैसों से दादी के लिए लोहे का चिमटा खरीद लेता है। कहानी में मेले से घर लौटते दोस्तों से उसकी चुहलबाजी और चूल्हे की आग में जलती बूढ़ी दादी अमीना की उंगलियाँ बचाने की सोच के जरिए हामिद के बालमन का भावपूर्ण चित्रण है।[8] प्रेमचंद की 'ईदगाह' सूक्ष्म संवेदना की कहानी है जो चिमटे की खरीद के जरिए बूढ़ी दादी के हृदय में वात्सल्स रस का उद्रेक कर पाठक को रस विभोर कर देती है।[9]

प्रेमचंद ने अपनी कहानी 'बड़े भाई साहब' में बालमनोविज्ञान के कई मूलभूत प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास किया ळें कहानी दो भाइयों की है। बड़ा भाई परिश्रमी, अध्ययनशील और संयमी है। छोटा भाई बिल्कुल इससे विपरीत स्वभाव का है। बड़े भाई, छोटे का दायित्व अपने कंधों पर समझते हैं। उसे सही रास्ते पर रखना उनकी जिम्मेदारी है। परंतु यथार्थ स्थिति कुछ ऐसी है कि छोटा कम परिश्रम करने पर भी अच्छे अंकों से पास होता रहता है और बड़े भाई साहब पांच साल बड़े होने पर भी, साल दर साल फेल हो कर उससे केवल एक कक्षा के अंतर पर रह जाते हैं। बड़ा उपदेश देने का कोई अवसर नहीं चूकता। छोटे को ये सब नापसंद होने के बावजूद भी सुनना ही पड़ता है क्योंकि बड़े का आत्मानुशासन व संयमी व्यवहार उस पर नियंत्रण और गहरा प्रभाव रखता है। यह उल्लेखनीय है कि फ्रायड ने भावनाओं के नियंत्रण, आत्मपीड़न को व्यक्ति की प्रमुख रक्षायुक्ति के रूप में व्याख्यायित किया है। उनका कहना था कि मनुष्य की यह रक्षायुक्ति उसमें बचपन में ही पनपने लगती है।[10] स्वाभाविक है कि यह प्रवृत्ति बड़े भाई में भी विद्यमान है। लेकिन इसके लिए जो धैर्य चाहिए बच्चों में उसका अभाव होना भी स्वाभाविक है। यह बड़े भाई में भी है। प्रेमचंद को बाल मनोविज्ञान के इस पक्ष की गहरी समझ है। कहानी के अंत की घटना में वह दिखाई भी देता है। बड़े भाई साहब आत्मस्वीकार करते हुए कहते हैं, "मैं कनकौवे उड़ाने को मना नहीं करता। मेरा भी जी ललचाता है, लेकिन करूँ क्या, खुद बेराह चलूँ, तो तुम्हारी रक्षा कैसे करूँ? यह कर्त्तव्य भी तो मेरे सिर है ना! और अंत में वह स्वयं एक उड़ता हुआ कनकौवा लूटने के लिए दौड़ पड़ते हैं।"[11]

जय शंकर प्रसाद की कहानी 'छोटा जादूगर' में एक गरीब बेटे की अपनी बीमार मां के लिए कर्त्तव्य–भावना और देशप्रेमी पिता के लिए गौरव–भावना दर्शनीय है। यहां भी एक मेले का दृश्य है परन्तु ईदगाह के मेले से अलग। वहां हामिद मेले को देखने और खरीदने वाले के रूप में है जबकि छोटा जादूगर अपनी जरूरतों को पूरी करने के लिए मेले में अपने जादू को बेचने आया है 'कार्निवाल के मैदान में बिजली जगमगा रही थी। हंसी और विनोद का कलनाद गूंज रहा था। मैं खड़ा था। उस छोटे फुहारे के पास, जहां एक लड़का चुपचाप शरबत पीनेवालों को देख रहा था। उसके हाथ में कुछ ताश के पत्ते थे। उसके मुंह पर गम्भीर विषाद के साथ धैर्य की रेखा थी।[12] लड़का मेले की चकाचौंध से अलग है हामिद चकाचौंध से प्रभावित है, पर दोनों ही अपने प्रियजन का ख्याल हमेशा अपने मन में रखने वाले, उनके लिए प्यार, लगाव और कर्त्तव्य भाव से भरे हुए। हामिद खिलौनों की निंदा करता है– मिट्टी ही के तो हैं, गिरे तों चकनाचूर हो जायें, लेकिन ललचाई हुई आँखों से खिलौनों को देख रहा है और चाहता है कि जरा देर के लिए उन्हें हाथ में ले सकता। उसके हाथ अनायास ही लपकते हैं, लेकिन लड़के इतने त्यागी नहीं होते, विशेषकर जब अभी नया शैक हो। हामिद ललचाता रह जाता है। खिलौनों के बाद मिठाइयाँ आती है। किसी ने रेवड़ियाँ ली हैं, किसी ने गुलाबजामुन, किसी ने सोहन हलवा। मजे से खा रहे हैं। हामिद बिरादरी से पृथक है। अभागे के पास तीन पैसे हैं। क्यों नहीं कुछ लेकर खाता। ललचायी आँखों से सबकी ओर देखता है।[13] दूसरी तरफ छोटे जादूगर के मनोभाव भी हामिद जैसे ही हैं, 'उसने कहा– तमाशा देखने नहीं, दिखाने निकला हूँ। कुछ पैसे ले जाऊंगा, तो मां को पथ्य दूंगा। मुझे शरबत न पिलाकर आपने मेरा खेल देखकर मुझे कुछ दे दिया होता, तो मुझे अधिक प्रसन्नता होती।[14] यहाँ दोनों ही अपनी मां और दादी के लिए कुछ ले लेना चाहते हैं ताकि उन्हें थोड़ा आराम मिल सके। छोटे जादूगर ने बताया कि अब उसकी मां को अस्पताल वालों ने निकाल दिया है। लेखक ने उसकी झोपड़ी में देखा कि एक स्त्री चिथड़ों से लदी हुई कांप रही थी। छोटे जादूगर ने अपने जादू के पैसों से खरीदा कंबल उसके ऊपर से डालकर उसके शरीर से चिपटते हुए कहा, 'मां'।[15] जयशंकर प्रसाद की दूसरी कहानी 'मधुआ' का अनाथ बच्चा बिना माँ–बाप का होने के कारण अपना पालन–पोषण स्वयं करने को मजबूर है। "मैंने दिन भर से कुछ खाया नहीं। कुछ खाया नहीं?, इतने बड़े अमीर के यहाँ रहता है और दिन–भर तुझे कुछ खाने को नहीं मिला? जवाब आया– यही कहने तो मैं गया था जमादार के पास। मार तो रोज ही खाता हूँ। आज तो खाना ही नहीं मिला। कुँवर साहब का ओवरकोट लिए खेल मैदान में दिन भर साथ रहा। सात बजे लौटा तो नौ बजे तक और भी कुछ काम करना पड़ा। आटा रख नहीं सका था। तो रोटी कैसे बनती। जमादार से यही कहने गया था।[16] लेकिन बच्चे को रोटी की जगह मिली, दो लातें खाने को। बच्चे पर शराबी को दया आ जाती है और वह उसे साथ ले जाता है और भरपेट खाने को देता है। अंत में जब शराबी उससे पूछता है कि कोई काम कर सकेगा तो बालक दृढ़ता से कहता है, 'कोई भी काम करूँगा, कहीं भी रह लूंगा, पर उस ठाकुर साहब के पास वापस नहीं लौटूंगा।[17] बालक का स्वाभिमान उसे बड़ा बना देता है। हिन्दी साहित्य के मनोवैज्ञानिक कहानीकार जैनेन्द्र कुमार, बालमनोविज्ञान की गहरी समझ रखते हैं। "नारी–पुरुष के अतिरिक्त जैनेन्द्र जी ने अपनी कहानियों में बाल–चरित्रों के मनोविज्ञान का भी सूक्ष्म परिचय दिया है।[18] उनकी कहानी 'पाजेब' में बालक आशुतोष को पतंग उड़ाने का शौक है और नई पतंग–डोर को देख कर पिताजी द्वारा उस पर पाजेब चोरी का संदेह करना उसे अंदर तक झकझोर देता है। पिता द्वारा निरंतर संदेहात्मक प्रश्न उसको गुमसुम बना देते हैं। वह अपने आप को निर्दोष सिद्ध करने के लिए एक भी शब्द नहीं बोलता दरअसल बच्चे अत्यंत स्वाभिमानी प्रवृत्ति के होते हैं। कहानी में बच्चे को सच बोलने के लिए यातनाएँ भी दी जाती हैं परन्तु फिर भी "झट उसके चेहरे पर जिद्द, अकड़ और प्रतिरोध के भाव दिखाई देने लगे।[19] दूसरी तरफ जैनेन्द्र कुमार ने 'खेल' कहानी में अबोध बाल–मन के निश्प्रयोजन कार्य के कियान्वयन में उठने वाली बाल संवेदना को प्रकट किया है। हर अवस्था में बालक अपने प्रति हुए बुरे व्यवहार का बदला ठिक उसी प्रकार लेने का प्रयत्न करता है जैसा बुरा व्यवहार उसके साथ हुआ

है।[20] कहानी में एक बालक और बालिका, मनोहर और सुरबाला समुद्र किनारे मिट्टी से घरौंदा बनाने का खेल खेल रहे हैं। मनोहर, बाला का घरौंदा पैर मार कर तोड़ देता है। बालिका गुस्सा और नाराज हो कर कहती है कि, "मेरा भाड़ क्यों तोड़ा जी? हमारा भाड़ अभी बनाकर दो।[21] मनोहर उसे बहलाने के लिए दोबारा भाड़ बना देता है। जो बालिका अभी तक अपना भाड़ टूटने पर उदास थी, गुस्सा थी अब मनोहर द्वारा बनाए भाड़ को तोड़कर प्रसन्नता से नाचने लगती है। यह कहानी बालमनोविज्ञान का एक बेहतरीन उदाहरण है।

यशपाल की कहानियों में बाल–मनोविज्ञान का चित्रण बहुत ही सूक्ष्मता, यथार्थवादी और प्रगतिशील दृष्टिकोण पर आधारित है। बच्चों के मन की कोमलता, भावना, संवेदना, जिद्द और जिज्ञासा को बड़ी गहराई से उनमें उकेरा गया है। 'आदमी का बच्चा' कहानी में उन्होंने केन्द्रिय पात्र डॉली के अकेलेपन को रेखाकिंत किया है। वह एक अमीर पिता की इकलौती पुत्री है, अंग्रेजी स्कूल में पढ़ती है, उसकी देखभाल के लिए नियमित आया है, घर में सब सुख–सुविधाएँ उपलब्ध हैं परन्तु उसे अपने पिता के नौकरों के बच्चों के साथ खेलने की मनाही है वह केवल अमीर बच्चों के साथ दोस्ती रख सकती है। लेकिन बाल मन इन उच्च वर्गीय बारीकियों को कहाँ समझ पाता है? बग्गा साहेब का दोपहर के भोजन का समय हो चुका है और इस समय डॉली पिता के आस–पास होनी ही चाहिए। मिसेज बग्गा तीन–चार बार उसे पुकार चुकी हैं और तभी, "आया डॉली को पकड़े ला रही है, धोबी और माली के क्वार्टरों की ओर से। दो–तीन दिन पहले मालिन के बच्चा हुआ है और उसे गोद में लेने के लिए डॉली कितनी ही बार जिद्द कर चुकी है।[22] बालक के मन को माता–पिता अपनी झूठी शान के लिए समझना ही नहीं चाहते। वो इस तथ्य को मानना ही नहीं चाहते कि बच्चा स्वभाव से जिज्ञासु होता है, वह और कुछ करे न करे परन्तु वो काम जरूर करेगा जिसको करने से उसे मना किया जाएगा। बच्ची कहीं बिगड़ न जाए, वो डरे रहते हैं क्योंकि, "लड़की उधर जाती तो उन बेहूदे बच्चों के साथ शहतूत के पेड़ के नीचे धूल में से उठा–उठाकर शहतूत खाती। उन्हें भय था, उन बच्चों के साथ डॉली की आदतें न बिगड़ जाएँ।[23] बड़ों को कैसे समझााया जाए कि आदतों के चक्कर में वो अपने बच्चों का मासूम बचपन बिगाड़ रहे हैं। यशपाल की कहानी 'अखबार में नाम' अलग मनोविज्ञान पर केन्द्रित है। बच्चा हमेशा सबके आकर्षण का केन्द्र होना चाहता है या सबका ध्यान पाना चाहता है, हालांकि हम बड़े भी कहीं न कहीं ऐसा ही चाहते हैं परन्तु बच्चों में यह प्रवृति ज्यादा और खुलकर पाई जाती है। इसके लिए चाहे उनका कोई नुकसान ही क्यों न हो जाए। बल्कि वो कामना करते हैं कि काश चोट मुझे लग जाती तो सबका ध्यान मेरी और चला जाता। कहानी का केन्द्रिय पात्र गुरदास सोचता है कि, "अगर अनन्तराम की जगह वही बेहोश होकर गिर पड़ता, वैसे ही उसे चोट आ जाती तो कितना अच्छा होता? आह भरकर उसने सोचा, सब लोग उसे जान जाते और उसकी खातिर होती।[24] यहाँ पर यशपाल उस मनोग्रन्थी की ओर इशारा कर रहे हैं जो औसत होने वाले बच्चों में अकसर पाई जाती है।

उपरोक्त कहानियों के विश्लेषण के पश्चात सहज ही कहा जा सकता है कि प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, जैनेन्द्र कुमार और यशपाल ने अपनी कहानियों में बाल–मनोविज्ञान को बहुत सूक्ष्मता से चित्रित किया है। उन्होंने बालकों को देखने का नया दृष्किोण दिया और उनके साथ व्यवहार करने की एक नई समझ समाज को दी है। अगर बच्चों के साथ बड़ों का व्यवहार जिम्मेदारीपूर्ण होगा तो निःसंदेह समाज एक जिम्मेदार भविष्य का निर्माण करेगा। यह संदेश बाल–मनोविज्ञान पर लिखा कथा साहित्य समाज को देता है।

सन्दर्भ

1. पाटीदार, डॉ. अनीता, महिला साहित्यकारों का बाल–साहित्य में योगदान, JETIR 2203440.pdf (Online)
2. तनेजा, डॉ. विनोद कुमार, कसक, नवम्बर 2018
3. वर्मा निर्मल, गोयनका कमलकिशोर, प्रेमचंद रचना संचयन, साहितय अकादमी, नई दिल्ली 2010
4. तिवारी, अजित कुमार, प्रेमचंद के साहित्य में बालमनोविज्ञान, संवीक्षा, हिन्द प्रिटिंग वर्क्स, मिर्जापुर, उ.प्र.
5. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग–1, ईदगाह, प्रकाषन संस्थान, 2012, दरियागंज, दिल्ली
6. मानसरोवर भाग–1, ईदगाह, प्रकाशन संस्थान, 2012, दरियागंज, दिल्ली।
7. मानसरोवर भाग–1, ईदगाह, प्रकाशन संस्थान, 2012, दरियागंज, दिल्ली।
8. https://www.livehindustan.com/uttar-pradesh/gorakhpur/story-munshi-premchand
9. कथाक्रम, सं0 डॉ. रोहिणी अग्रवाल, खाटू श्याम प्रकाषन, 2012, रोहतक।
10. फ़ायड, अन्ना, इगो एण्ड डिफरेंस मेकेनिज्मज, इनसाईक्लोपिडिया ब्रिटानिका, इण्डिया प्रा. लि., नई दिल्ली, 2005
11. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग–1, बड़े भाई साहब, राजकमल प्रकाषन, 2006,दिल्ली
12. कहानी एकादषी, सं0 डॉ. दषरथ ओझा, षिक्षा भारती, 2016, दिल्ली।
13. मानसरोवर भाग–1, ईदगाह, प्रकाषन संस्थान, 2012, दरियागंज, दिल्ली।
14. कहानी एकादषी, सं0 डॉ. दषरथ ओझा, षिक्षा भारती, 2016, दिल्ली।
15. कहानी एकादशी, सं0 डॉ. दषरथ ओझा, षिक्षा भारती, 2016, दिल्ली।
16. प्रसाद, जय शंकर, कहानी संग्रह, हिन्दी कोश, ऑनलाईन, अंक 1, रिलिज तिथि 30 नवंबर 2020।
17. वही पृ. सं. 639
18. गोयल, उषा, हिन्दी कहानीः चरित्र–चित्रण का विकास, रोहतक रोड़, दिल्ली, 1981
19. कुमार, जैनेन्द्र, पाजेब, भारत दर्षन प्रकाषन डॉट कॉम इन
20. जैन, डॉ अनामिका, जैनेन्द्र कुमार की कहानियों में बालमन, दक्षिणापथ पत्रिका, जऩ–मार्च 2023।
21. जैन, निर्मला (संपा.), जैनेन्द्र रचनावलीः खण्ड–4, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2008।
22. यशपाल, आदमी का बच्चा, हिन्दी कहानी डॉट कॉम।
23. वही
24. यशपाल, अखबार में नाम, हिन्दी कहानी डॉट कॉम